इस्लाम धर्म और जैन धर्म में घातियो की पारलौकिक स्थिति : एक तुलनात्मक अध्ययन

अनुसंधानकर्त्री –

अदीबा नाज़

संस्कृत विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुज़फ्फरनगर

मनुष्य का कोई भी कर्म चाहे वह सुकर्म हो या दुष्कर्म सभी का सम्बन्ध प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से परलोक से है।[1] लोगों का अपने जीवन से निराश होकर, असफलता से दुखी होकर, अपमान एवं अपकीर्ति से बचने के लिए अथवा इच्छा की पूर्ति न होने के दुः खो से डूबकर, फाँसी लगाकर, जलकर, विषपान करके, गोलियाँ खाकर प्राण त्याग दिए जाते हैं। उसका एकमात्रा प्रधान कारण परलोक में अविश्वास है। मनुष्य को निश्चय होना चाहिए कि हमारा जीवन इस शरीर तक ही सीमित नहीं है, अपितु मरणोपरान्त भी हमारा एक और जीवन है, अपने कृत्य कर्मो को भोगना पडेगा तथा आत्महत्या रूपी नया घोर पाप करने से परलोक और अधिक कष्टमय होगा।

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ।।[2]

क्योकि कर्मो का तो केवल भोग ही सार है।[3] यह जीव जिस प्रकार अर्थात् शरीर से, वचन से, मन से जैसा कुकर्म करेगा वैसा ही फल भोगेगा।[4] जो मूर्ख धन के मोह से अंधे होकर प्रमाद में लगे रहते हैं, उन्हें परलोक का साधन नहीं सूझता, यही लोक है परलोक नहीं– ऐसा अविश्वासी पुरुष बार–बार मृत्यु के मुख को देखता है।[5]

इस्लाम धर्म में घातियों की स्थिति–

वास्तव में जहन्नम एक घात है। सरकशों (दबांगियों) का ठिकाना है।[6] संसार में किए गए सुकर्म और दुष्कर्मों का एक कर्मपत्रा होगा जो दाएं या बाएं हाथ मे दिया जाएगा जिसका कर्म–पत्रा उसके बाएँ हाथ में मिलेगा वह कहेगा, ''काश मेरा कर्म–पत्रा मुझे न दिया गया होता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? काश मेरी वही मौत (जो दुनिया में आई थी) निर्णायक होती आज मेरा माल मेरे कुछ काम न आया। मेरा सारा प्रभुत्व समाप्त हो गया। आदेश होगा पकड़ो इसे और इसकी गरदन में तौक डाल दो, फिर इसे जहन्नम में झोंक दो, फिर इसको सत्तर हाथ लम्बी जंजीर में जकड़ दो।[7] और उन घावों के धोवन के सिवा इसका कोई और भोजन ना होगा। जिसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं खाता।[8] भटके हुए और झूठ बोलने वालों के लिए जक्कूम (थूहड) के पेड़ का भोजन होगा, उसी से वे पेट भरेंगे, ऊपर से खौलता हुआ पानी तौंस लगे हुए ऊँट की तरह पियेंगे।[9] जहन्नमी लोगों को ऐसा गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आँते तक काट देगा।[10] जक्कूम का खाना गुनहगार का खाना होगा, तेल की तलछट जैसा। पेट में वह इस तरह, जोश खाएगा जैसे खोलता हुआ पानी जोश खाता है। पकड़ो इस गुनहगार को और खींचते हुए ले जाओ इसे जहन्नम के बीचो– बीच और उंडेल दो इसके सिर पर खौलते हुए पानी का अजाब चख इसका मजा, बड़ा जबरदस्त इज्जतदार आदमी है तू।[11] इसी तिरस्कार की हालत में वे हमेशा रहेंगे उसकी सजा में कमी होगी और न उन्हें फिर कोई दूसरी मोहलत दी जाएगी।[12] जिन लोगों ने अच्छाई की बातों को मानने से इन्कार कर दिया उन्हें जरूर ही आग में झोंका जाएगा, उनके बदन की खाल गल जाएगी तो उसकी जगह दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि वे अच्छी तरह अजाब का मजा चखें।[13]

जो कुकर्मों के करने वाले हैं उनके सिरों पर खोलता हुआ पानी डाला जाएगा, जिससे उनकी खालें ही नहीं पेट के भीतर के भाग तक गल जाएंगे। उनकी खबर लेने के लिए लोहे की गदाएँ होंगी जब कभी वे घबराकर जहन्नम से निकलने की कोशिश करेंगे फिर उसी में ढकेल दिए जाएंगे कि चखो अब जलने की सज़ा का मजा।[14] कयामत के दिन अपराधियों के हाथ पाव जंजीरो में जकड़े हुए होंगे। तारकोल के वस्त्रा पहने होंगे आग की लपटें उनके चेहरों पर

छाई जा रही होंगी।[15] वह दिन आने वाला है जब हर व्यक्ति अपने किए का फल मौजूद पाएगा चाहे उसने भलाई की हो या फिर बुराई।[16]

जैन धर्म में घातियों की स्थिति–

यह जीव जैसा – जैसा पाप के वशीभूत होता है वैसा – वैसा ही बहुत भारी अन्धकार से पवित्राता से रहित, बदबूदार, अत्यधिक कष्टदायक, कठोर और भाड़ जैसी तीव्र तपन से सहित नरक में उत्पन्न होता है।[17]

वहाँ उत्पन्न होकर जीव आकाश से (उपपाद शय्याओं से) भूमि पर पड़ते हैं उसी समय पापी नारकी आकर भाले, तलवार दण्ड करौंत तथा पाश आदि के द्वारा उन जीवों के खण्ड– खण्ड करने लगते हैं। उस नरक में उष्ण में इतनी सख्ती होगी कि यदि मेरू पर्वत के बराबर तुषार से निर्मित पुद्गल का पिण्ड छोड़ा जाए तो वह छोड़ते ही साथ पिघल कर पृथिवी और अपने पिण्ड स्वरूप को छोड़ देगा। इसी प्रकार दूसरे स्थान होंगे जहाँ शीत की बाधा होगी ऐसे स्थानों में यदि आग के गोले छोड़े जाएँ तो वह क्षणमात्रा में ही उष्णता को त्याग कर अपने स्वरूप को बदल देगा। इस प्रकार पापी जीव शंका रहित नारकी जीवों के समूह के द्वारा निरन्तर मार खाता हुआ शीत और उष्ण की बाधा को सहता है। उन नारकियों के द्वारा जिसके हाथ और पैर खण्डित कर दिए गए हैं। ऐसा यह जीव दीन हुआ सब और भागता है और चिल्लाता है कि मुझे मत मारो, और चिल्लाता है कि मुझे मत मारो, मैं आपका दास हूँ, अब फिर ऐसा पाप नहीं करूँगा। नारकी कहते हैं रे जीव! तूने जवानी पाकर नशे में मस्त हो जो गुरु के वचनों का उल्लंघन किया तथा जुआ खेला उसी पाप के फलस्वरूप तेरा यहाँ आना हुआ है क्या यह नहीं जानता है? उसके उत्तर में वह कहता है कि आत्महित को ना जानते हुए मैंने नशा में मस्त होकर जुआ खेला मैंने आप लोगों का क्या अपराध किया? जिससे कि आप प्रहार किये जा रहे हैं, रुकते नहीं हैं। इस प्रकार के, वचन सुनकर अत्यंत दुष्ट नारकी उसे बहुत भारी तीव्र तपन से युक्त उस अग्नि में फेंक देते है जिससे कि उसका शरीर शीघ्र भस्म हो जाता है। कहते है तू अपने पाप को नहीं जानता? जो मनुष्य भोगो में लीन रहे, अपनी मनोवृत्ति के अनुसार आचरण करे, वृत की बात को ध्यान से नहीं सुनते उनकी अत्यंत दयनीय दशा होगी वहाँ मनुष्य चाहे जितनी चीख पुकार करेगा कोई नहीं सुनेगा, वह चिल्लाएगा मुझे छोड दीजिए, शस्त्राो से भयंकर प्रहार मत कीजिए, मैं दाँतों के नीचे दोनों हाथों की दशो अंगुलियां दबाता हूँ। इस प्रकार बहुत कष्टकारक मार खाता हुआ दीनता के वचनों को नारकियों से कहता है परन्तु वे नारकी उसे छोडते नहीं हैं। फिर वह पापी जिस किसी तरह छुपकर वहाँ से भागकर पर्वत के गुफा के भीतर घुसता है और अत्यंत शर्मिंदा होता हुआ मानता है कि यहाँ मुझे शरण मिल जाएगी परन्तु वहाँ पर्वत उसके ऊपर आ पडते हैं। उन पर्वतों से उसका शरीर चूर–चूर हो जाता है समस्त अंग खून से लिप्त हो जाते हैं, परन्तु मरता नहीं है। उसका शरीर फिर से पारे के समान फिर से मिल जाता है – ताकि वह अभी अपने कर्मों का फल भोग सके। यह जीव पीडाओं से संतप्त हुआ मृत्यु की इच्छा करेगा परन्तु मर नहीं पाएगा रत्नप्रभा, शर्करा प्रभा, बालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, घूमप्रभा, तमः प्रभा, तमस्तमः सात पृथिवी हैं। पापी जीव क्रम से इन सातों पृथिवियों को प्राप्त होता है। इन सारी ही पृथिवियों में रहने की आयु कई हज़ार वर्ष है। इन सब पृथिवियों के दुःखों को जैसे तैसे पार करता है, फिर वहाँ से मरकर तिर्यञ्च योनि में जाता है वहाँ भी अत्यंत घोर दुःख को सहता है। अहंकार से युक्त होता हुआ जो जीव, प्राणियों पर दया नहीं करता कुगति का कारण शोक करता है वह तिर्यञ्च योनि में जन्मता है।

धर्म को छोड़कर स्वर्ग प्राप्त कराने के लिए न पुत्रा समर्थ है, न पुत्री, न पिता, न माता, न कोई रिश्तेदार, न ही कोई भाई। भाई–भाई को भूल जाएगा माँ संतान से मुँह मोड़ लेगी, दादा पोते को नहीं पहचानेगा वहाँ कोई किसी के काम नहीं आएगा, सबको अपनी–2 पडी होगी। सब ओर त्राहि – त्राहि मची होगी।[18]

निष्कर्ष – यदि समझा जाए तो दोनों ही धर्मों में घाती जीवों की गति परलोक में अत्यंत दयनीय है। मनुष्य को चाहिए कि वह इस जंजाल रूपी संसार में हिंसक वृत्ति को त्यागकर ' त्यागभाव का निर्वाह करें किसी भी प्रकार से दूसरे को कष्ट न पहुंचाएँ। इस संसार के मोह माया के परवश न होते हुए निर्वाह करें क्योंकि मनुष्य अपने साथ कर्मों के अतिरिक्त कुछ नहीं लेकर जाता।

1– तत्वचिन्तामणि पृष्ठ – 631
2– ईशोपनिषद् – 3
3– धन्यकुमार चरितम् श्लोक –14 पृष्ठ सं0– 5
4– मनुस्मृति – 12/8
5– कठोपनिषद् – 1/2/6
6– कुरआन – सूरह न0 78 आयत न0 21, 22

7— कुरआन — सूरह न0 69 आयत न0 25.....32
8— कुरआन — सूरह न0 69 आयत न0 36, 37
9— कुरआन — सूरह न0 56 आयत न0 51.....55
10— कुरआन — सूरह न0 47 आयत न0 15
11— कुरआन — सूरह न0 44 आयत न0 43.....49
12— कुरआन — सूरह न0 2 आयत न0 162
13— कुरआन — सूरह न0 4 आयत न0 56
14— कुरआन — सूरह न0 22 आयत न0 20,21,22
15— कुरआन — सूरह न0 14 आयत न0 49,50
16— कुरआन — सूरह न0 3 आयत न0 30
17— धन्यकुमार चरितम् परिच्छेद— 5 पृष्ठ सं0 73— 77 श्लोक सं0 17.....41